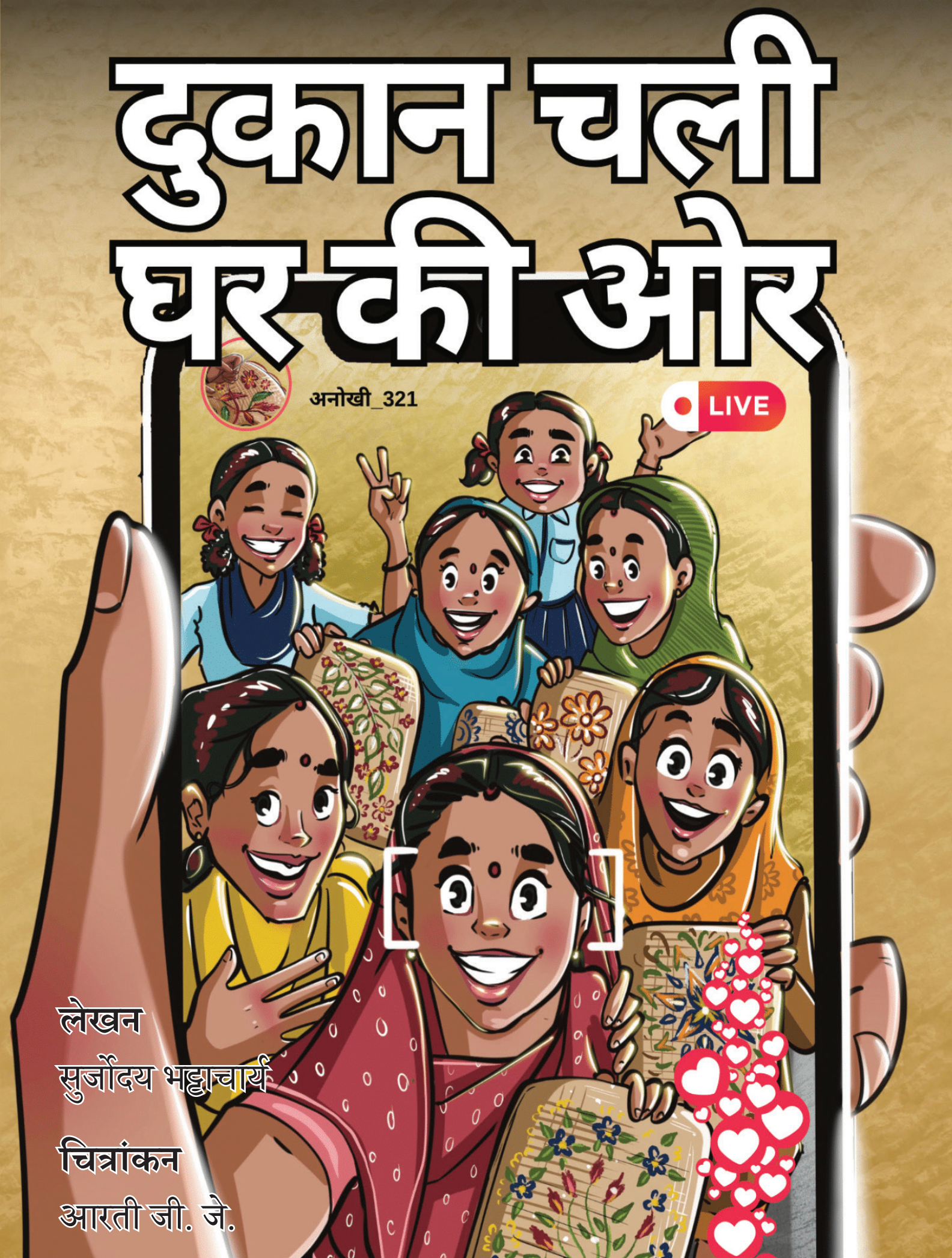
दुकान चली घर की ओर



लेखन
सुर्जोदय भट्टाचार्य

चित्रांकन
आरती जी. जे.

21239 – दुकान चली घर की ओर

ISBN 978-93-5729-173-6

प्रथम संस्करण

नवंबर 2025 कार्तिक 1947

PD 3T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 35.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा सरस्वती ऑफ़सेट प्रिंटर्स (प्रा.) लि., ए-5, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नई दिल्ली 110028 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे,
बनाशंकरी III इस्टेज, **बेंगलुरु 560 085** फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	:	बिज्ञान सुतार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	दीपक जैसवाल
सहायक संपादक	:	मीनाक्षी
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	सायुराज ए आर

लेआउट

मो. नाज़िम

कहानियाँ कहती हैं...!

कहानियाँ जीवन से जुड़े खट्टे-मीठे अनुभव, जीवन जीने का मनोबल और ऐसे विषयों के बारे में सहज रूप में जानकारी देती हैं जिन्हें जानना और समझना बहुत आवश्यक है। डिजिटल दुनिया हो या स्त्री-विमर्श, प्रकृति का संरक्षण हो या आजीविका के साधन, जीवन की चुनौतियों का सामना और समाधान हो या मतदान देने का अधिकार हो— सभी विषय ऐसे हैं जो जीवन को उत्कृष्ट रूप से जीने में सहायता करते हैं। 'महत्वपूर्ण जीवन-कौशल' के विभिन्न विषयों के इर्द-गिर्द बुनी गई सभी कहानियाँ पढ़ने का आनंद देने के साथ-साथ समझ, तर्क, विश्लेषण और उचित निर्णय आदि कुशलताओं का द्वार भी खोलती हैं। आइए, इन्हें पढ़ें, समझें और आगे बढ़ें!

कार्यक्रम समन्वयक— उषा शर्मा, *आचार्य* एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन— नीना सबनानी, *एनिमेटर* एवं *सहायक संकाय*, डिजाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद

आभार ज्ञापन

परिषद् पुस्तक के निर्माण में सहयोग करने के लिए अक्षय कुमार दीक्षित, *मेंटर*, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली; श्याम सिंह सुशील, *लेखक* तथा आई.आई.टी. हैदराबाद से प्रसाद एस. ओंकार, *विभाग प्रमुख* एवं *सह-आचार्य*, डिजाइन विभाग; दीपक जॉन मैथ्यू, *आचार्य*; डेवलिन जूड रेमेडियोज, *सहायक आचार्य*; अंकिता रॉय, *सहायक आचार्य*; मोहम्मद शाहिद, *सहायक आचार्य*; सौरव देवरी, *सहायक आचार्य*, डिजाइन विभाग; शुहिता भट्टाचार्जी, *सहायक आचार्य*, लिबरल आर्ट विभाग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद् गौतम गोस्वामी, *सहायक आचार्य*, एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग, बी.आई.टी., जयपुर; विभूति पंड्या, *विभाग प्रमुख* एवं *सहायक आचार्य*, एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग, बी.आई.टी., जयपुर; मो. शाह आलम, *वरिष्ठ परामर्शदाता* (आई.सी.टी.), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; भावना खेड़ा, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली तथा संपादकीय सहयोग के लिए प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के मोहन शर्मा, *सहायक संपादक* (संविदा); राकेश कुमार, *सीनियर प्रूफरीडर*; प्रियंका, *प्रूफरीडर* (संविदा) तथा पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए सुरेंद्र कुमार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मनोज कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) का आभार ज्ञापित करती है।

उल्लास ULLAS
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम
जन जन साक्षर

दुकान चली घर की ओर

लेखन

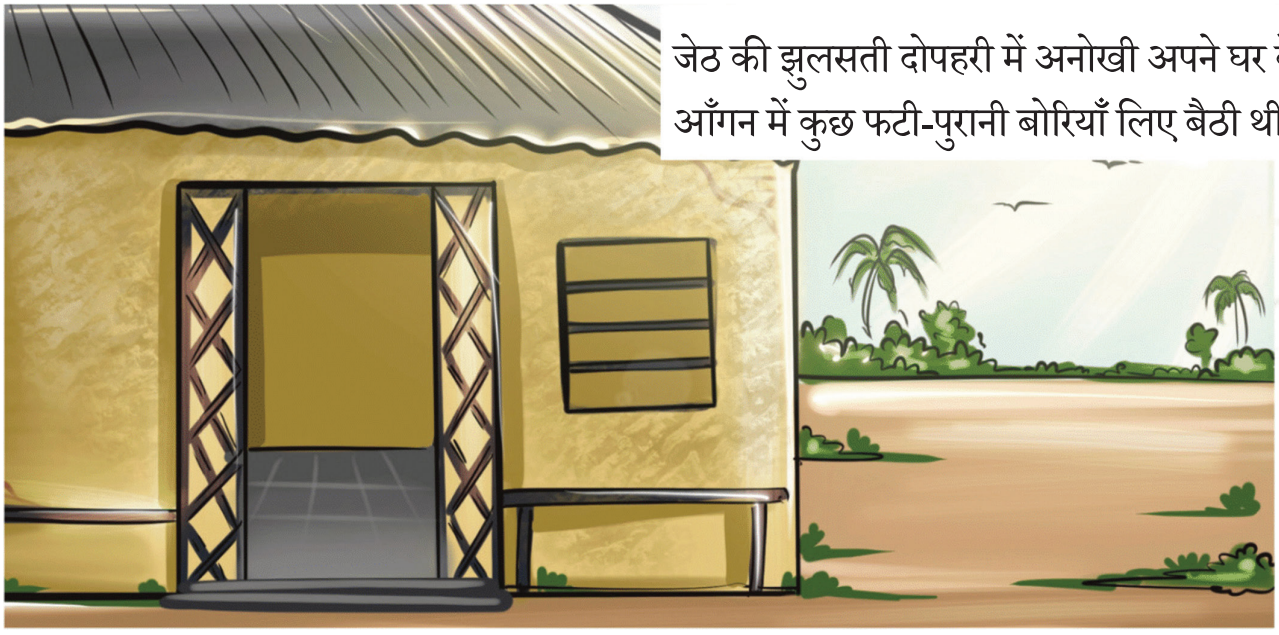
सुर्जोदय भट्टाचार्य

चित्रांकन

आरती जी. जे.

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING


जेठ की झुलसती दोपहरी में अनोखी अपने घर के आँगन में कुछ फटी-पुरानी बोरियाँ लिए बैठी थी।


अनोखी, क्या कर रही हो?


अरे विमला! आओ-आओ। घर पर कुछ पुरानी बोरियाँ रखी थीं। सोचा, इनसे चौकी पर बिछाने के लिए आसन ही बना लूँ।


विमला ने देखा कि अनोखी बोरियों को सिलकर उनके ऊपर पटुए की घास से बहुत सुंदर कलाकारी कर आसन बना रही थी।
अरे वाह!


अनोखी, तुम तो सच में अनोखी हो। तुमने इतनी खूबसूरत कढ़ाई करके इन पुरानी बोरियों को बिल्कुल नए जैसा कर दिया है।
इसमें कौन-सी बड़ी बात है! यह काम तो मैं सालों से कर रही हूँ।
?!
अरे! तुम नहीं जानती कि दुनियाभर में इस अनोखी कला को कितना पसंद किया जाता है और तुम चाहो तो तुम्हारी यह कला तुम्हारी आमदनी का ज़रिया भी बन सकती है।



थोड़ी ही देर में अनोखी अपने कमरे से ढेर सारी सुंदर बोरियाँ ले आई।



विमला ने एक-एक करके सबकी तस्वीर ली...

और उन्हें अपने सोशल मीडिया पर साझा किया।

साथ ही यह भी लिखा कि...






कुछ ही देर में विमला के सोशल मीडिया पर अनोखी के काम की तारीफ़ होने लगी।
अरे वाह!
वाह! कितनी प्यारी कशीदाकारी की है।
200
20
15
मैं इन्हें खरीदना चाहता हूँ।
देखो अनोखी, कितने लोग इन सुंदर बोरियों को खरीदना चाहते हैं।
सच विमला?


क्या लोग सचमुच इन्हें खरीदना चाहते हैं?
हाँ-हाँ! यही तो कमाल है सोशल मीडिया का! फोन अब केवल बात करने के लिए ही नहीं है। अब तो यह बैंक भी है, दुकान भी और स्कूल भी!

अच्छा! ऐसा है तो मुझे भी सिखा दो कि तुमने यह सब कैसे किया?

हाँ, क्यों नहीं। ज़रा अपना मोबाइल तो लाओ।

विमला की मदद से अनोखी ने भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना सीख लिया।

अगले ही दिन उसने अपने काम के बारे में बताते हुए एक छोटी-सी वीडियो और कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं।



अनोखी की इस कला की तस्वीरों को कुछ ही दिनों में हज़ारों लोगों ने देखा। बहुत से लोग उसकी बनाई हुई चीज़ों को खरीदना चाहते थे।





अनोखी ने धीरे-धीरे सीख लिया कि कैसे सुरक्षित तरीके से अपनी कला को दुनियाभर के लोगों से साझा किया जा सकता है।

उसकी सफलता की कहानी आस-पास के गाँवों तक पहुँचने लगी। बहुत-सी महिलाएँ अब उससे यह सब सीखना चाहती थीं।



अनोखी की यह कोशिश अब सिर्फ़ उस तक ही सीमित नहीं थी। अब उसके साथ इस सफ़र में और भी महिलाएँ जुड़ गई थीं।



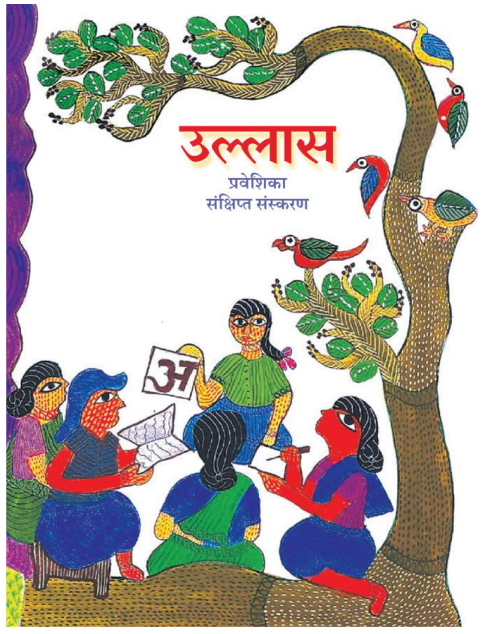


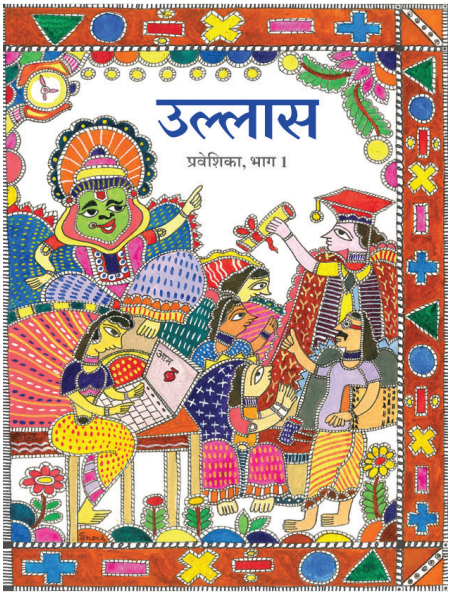

आज वह दूसरी महिलाओं को भी अपनी कला और सोशल मीडिया का सही उपयोग करना सिखाती है। अब दुकान तो घर आ ही चुकी है, साथ ही उसका स्कूल भी घर से ही चल रहा है।

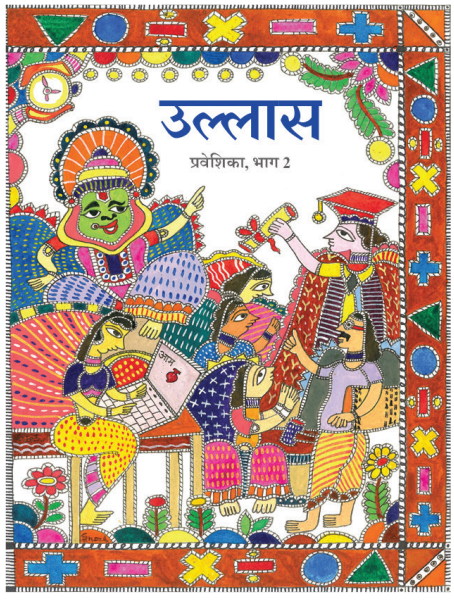
सा विद्या या विमुक्तये

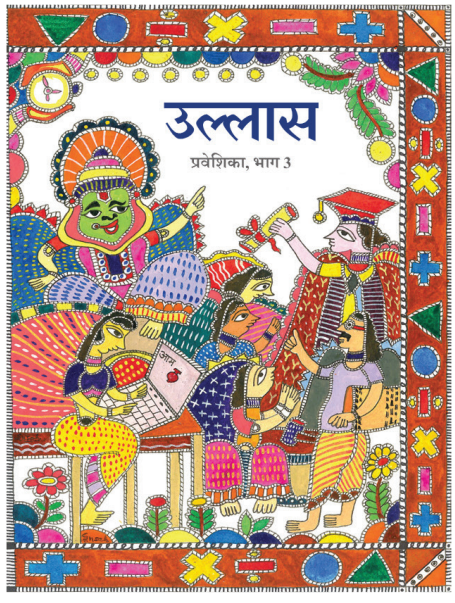
CELL FOR NATIONAL CENTRE FOR LITERACY

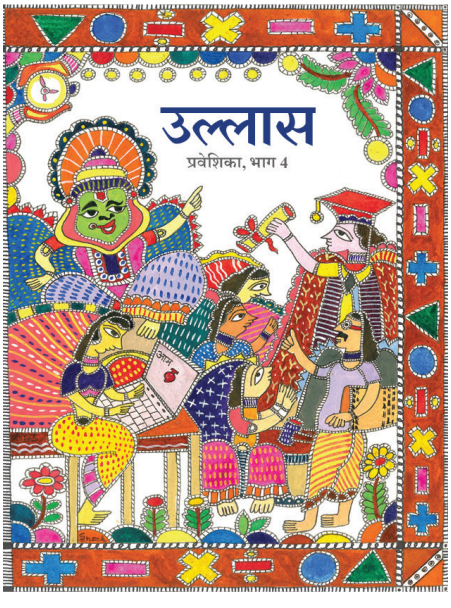
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र–प्रकोष्ठ

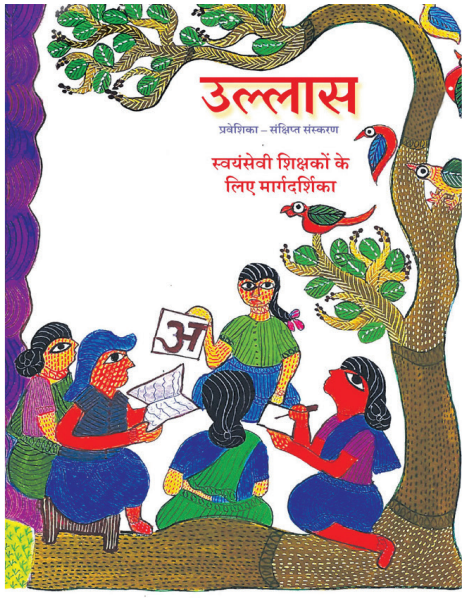


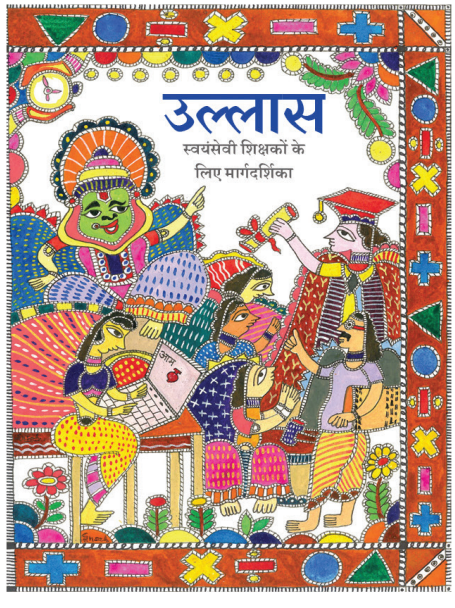


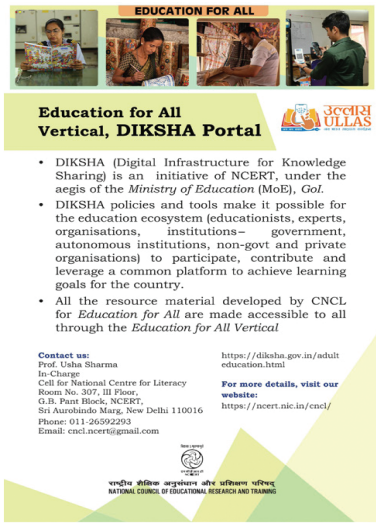


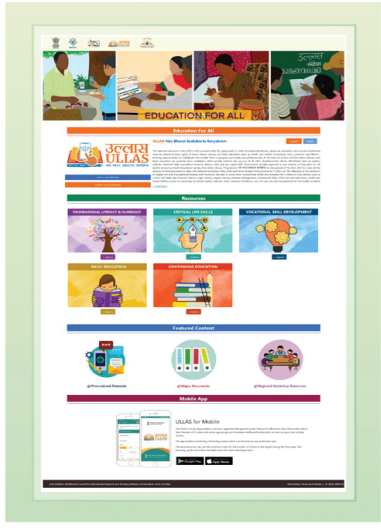




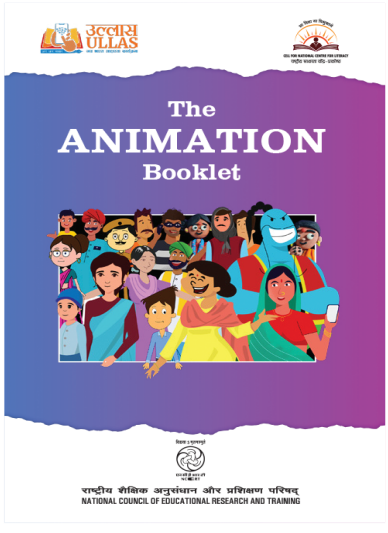


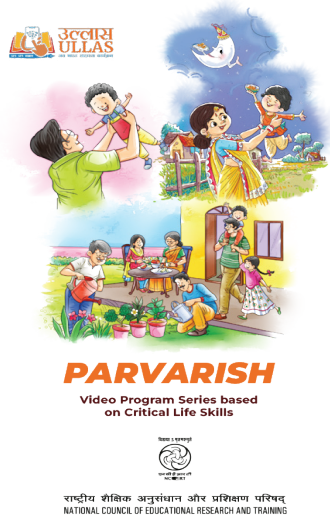


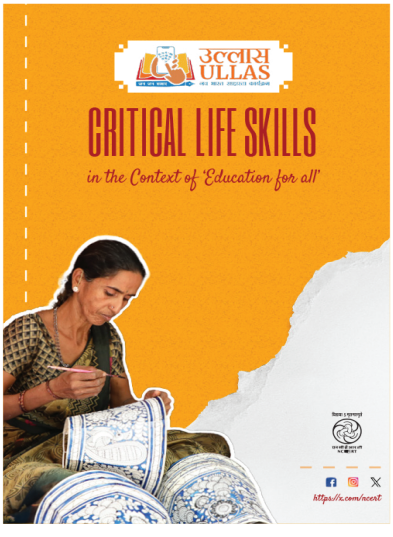


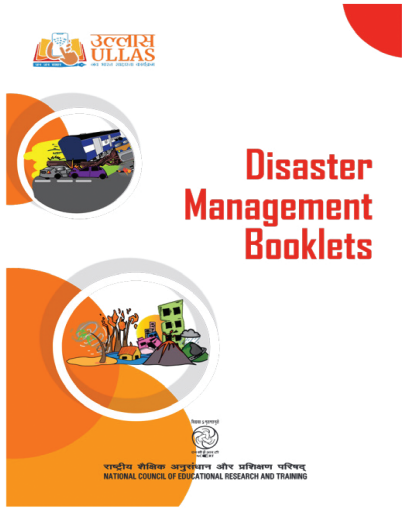


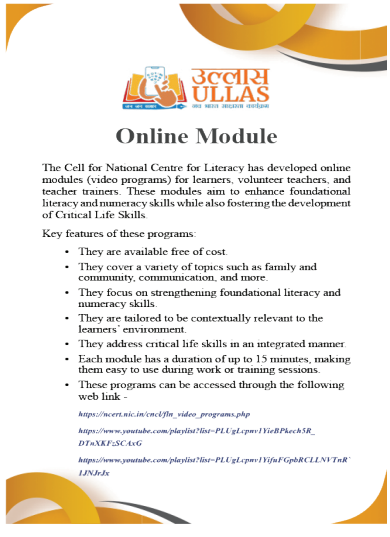












DIKSHA (Education for All Vertical)

https://diksha.gov.in/adult-education.html

CNCL Website

https://ncert.nic.in/cncl/


साक्षरता की डगर पर
अ
आ


उल्लास ULLAS
"स्वास्थ्य एवं स्वच्छता"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | स्वास्थ्य एवं स्वच्छता


उल्लास ULLAS
"सफाई है ज़रूरी"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल । स्वास्थ्य और स्वच्छता


ऑडियो कार्यक्रम- डिजिटल साक्षरता
अफवाहों से रहें दूर
उल्लास ULLAS


उल्लास ULLAS
"बाढ़"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | आपदा प्रबंधन


उल्लास ULLAS
"पृथ्वी हमारा घर"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | पर्यावरण संरक्षण


परवरिश


उल्लास ULLAS
"फ़ोन हुआ चोरी
तो ये काम है ज़रूरी"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | डिजिटल साक्षरता

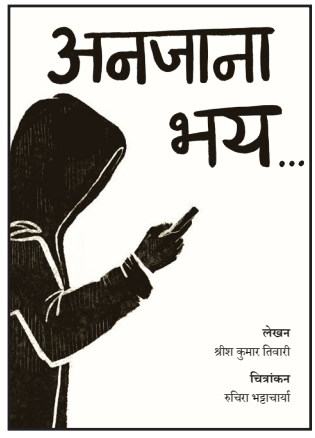

उल्लास ULLAS
"समझदार बिटिया"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | आपदा प्रबंधन

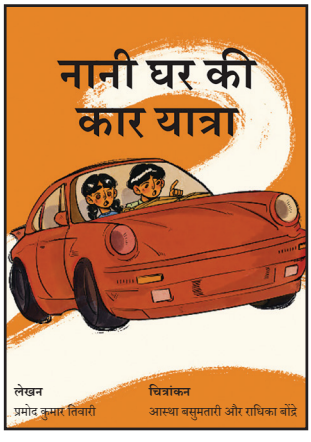

उल्लास ULLAS
"डिजिटल दीदी"
महत्वपूर्ण जीवन कौशल । डिजिटल साक्षरता

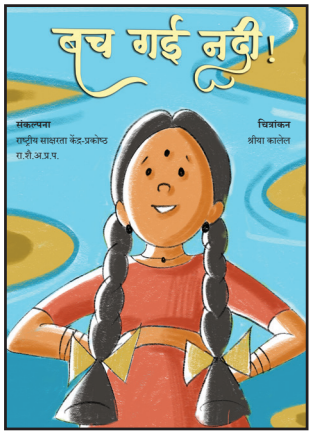
महत्वपूर्ण जीवन-कौशल पर आधारित

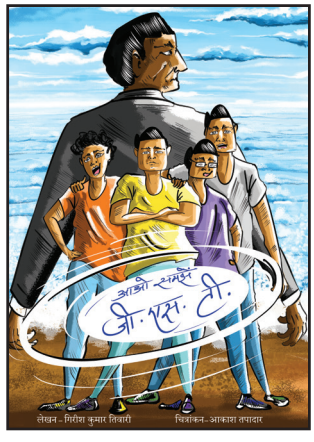
कथा शृंखला

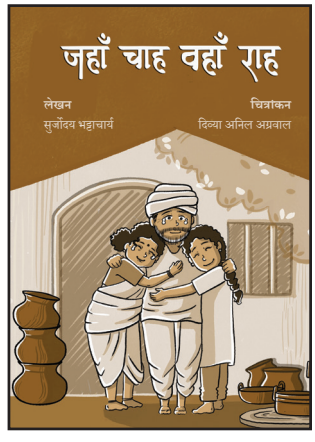


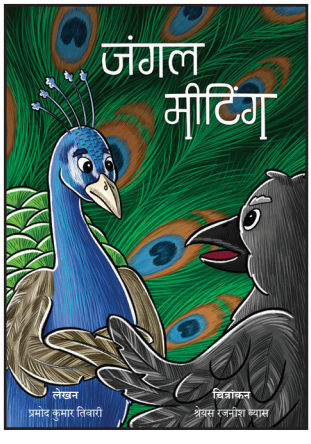




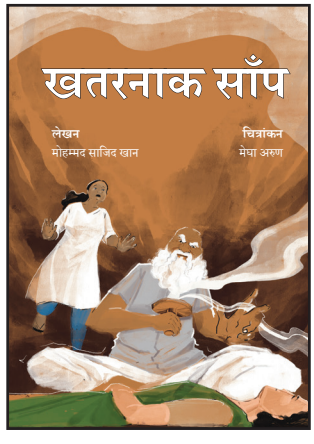






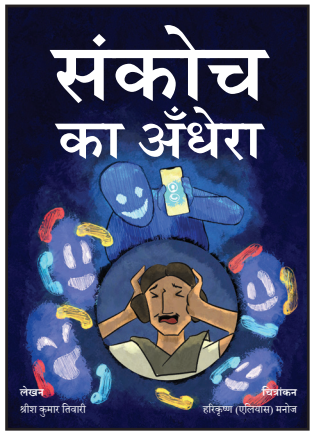


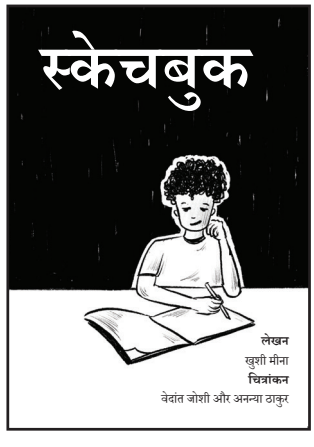












राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय
आपका डिजिटल पुस्तकालय!
असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें।



21239
विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
ISBN 978-93-5729-173-6